आपो हि ष्ठा मयोभुवः

जुलाई 2013

संरक्षक
राजदेव सिंह

मुख्य संपादक
डॉ. मनमोहन गोयल

परामर्शदाता
सी. पी. कुमार
डॉ. जयवीर त्यागी
डॉ. सुधीर कुमार
डॉ. एस.डी. खोब्रागड़े
डॉ. एस.पी. राय

संपादक
डॉ. रमा मेहता

सह संपादक
प्रदीप कुमार उनियाल
पवन कुमार शर्मा

प्रकाशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
जलविज्ञान भवन, रूड़की-247667
उत्तराखंड

मुद्रक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रूड़की के लिए
सी.एस.आई.आर.- राष्ट्रीय विज्ञान
संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग,
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित!

जल चेतना

सम्पादकीय

तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का प्रस्तुत अंक सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि यह अंक प्रबुद्ध पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा। जैसा कि प्रायः कहा जाता है विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में लिखना दुष्कर कार्य है परंतु पत्रिका प्रकाशन के इस तरह के कार्य इस तर्क को झूठा साबित कर देते हैं। संस्थान का प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को जनसाधारण तक पहुंचाया जाए जिससे समाज का हर वर्ग जल संबंधी शोध कार्यों की नित नई जानकारियों का लाभ उठा सके। अभी तक संस्थान सामान्य तौर पर जल एवं जलविज्ञान से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारियों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाता रहा है। परंतु अब संस्थान द्वारा इस अनुकरणीय पहल के तहत पिछले वर्ष यह निर्णय लिया गया है कि इन महत्वपूर्ण जानकारियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया जाए। संस्थान ने प्रयास किया है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधित विषयों की जानकारियों के साथ-साथ जल चेतना में ऐसे लेखों को भी सम्मिलित किया जाए जिनका जनसाधारण के जीवन से कोई न कोई सरोकार अवश्य हो। यह प्रयास किया गया है कि लेखों की भाषा सरल व सुबोध हो तथा हर वर्ग के पाठकों को यह उपयोगी तथा रोचक लगे।

इस अंक में ''पानी को पानी की तरह न बहायें'', ''भारत के मुख्य जल स्रोत : उत्तराखण्ड हिमालय'', खाद्य सुरक्षा के लिए जल संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता'', ''जल चिकित्सा : एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति'' इत्यादि जैसे रोचक एवं जनोपयोगी लेखों का समावेश किया गया है। पानी से संबंधित तकनीकी जानकारी के अतिरिक्त कुछ अन्य रोचक विषयों जैसे कि ''जल प्रदूषण : समस्या व समाधान'', ''कहीं बाढ़ कहीं सूखा फिर भी मानव ना सीखा'', ''स्वच्छ पेयजल से वंचित आधी आबादी'' इत्यादि पर भी लेख शामिल किये गये हैं।

विगत एक दशक से देश में जल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसका प्रमुख कारण जनसाधारण को जल के संबंध में पर्याप्त जानकारी का न होना है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से जल से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारियों को जन सामान्य तक पहुँचाना ही हमारा परम उद्देश्य है ताकि आने वाले समय में पानी के दुरूपयोग को कम किया जा सके तथा पानी की निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता पर रोक लगाई जा सके। जन-जागरूकता अभियान एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह पत्रिका निःशुल्क वितरित की जायेगी। अतः जो भी सुधी पाठक इस पत्रिका को मंगवाना चाहते हैं वे इस पत्रिका के अन्त में दिये गये सदस्यता फार्म को भरकर सम्पादक के नाम भेजने का कष्ट करें ताकि उनका नाम सूची में शामिल किया जा सके।

सम्पादक मंडल उन समस्त विद्वत लेखकों का आभारी है जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं उपयोगी लेख देकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। जल चेतना के इस अंक में जिन स्रोतों से चित्रों का संकलन किया गया है संपादक मंडल उन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमें राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर.) नई दिल्ली की सुश्री दीक्षा बिष्ट (वैज्ञानिक जी), श्री प्रदीप शर्मा (वैज्ञानिक एफ), सुप्रिया गुप्ता (प्रोडक्शन आफिसर) एवं अन्य स्टाफ का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ इसके लिये हम हृदय से उन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को बेहद रोचक तथा उपयोगी लगेगी। पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक तथा सुन्दर बनाने तथा सामग्री एवं साज-सज्जा में सुधार लाने के लिए समस्त सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएं अपेक्षित हैं।

मूल्य : निःशुल्क
शिकायत : 01332-249228, 249201
ई-मेल : rama@nih.ernet.in

सम्पादकीय : 01332-249262, 249228,
फैक्स : 01332-272123
ई-मेल : rama@nih.ernet.in
वेब साइट : www.@nih.ernet.in

© राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पत्रिका में प्रकाशित आलेख एवं रचनाओं में प्रस्तुत तथ्य लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद रुड़की न्यायालय द्वारा ही निपटाए जायेंगे।